कच्छपघातकालीन मन्दिर
कदवाहा

जिला- अशोक नगर (मध्य प्रदेश)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उत्तरी क्षेत्र)
भोपाल (म.प्र.)

कदवाहा

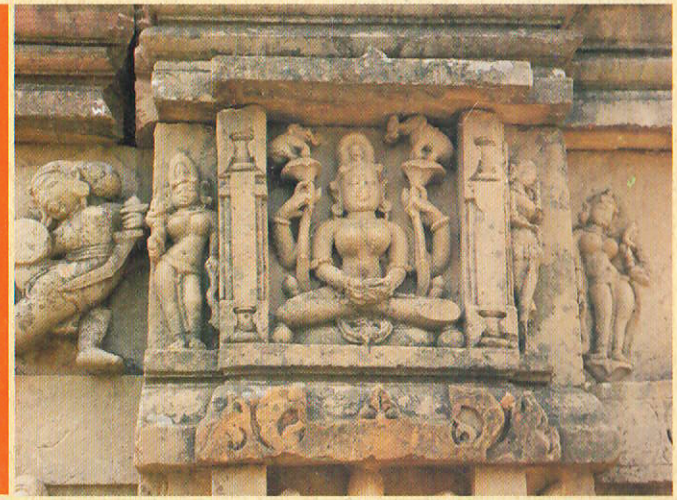

गज-लक्ष्मी

गर्भगृह के प्रवेश द्वार की ड्योढ़ी (Door-sill)

''स्मारक हमारी राष्ट्रीय धरोहर हैं
आईए इनकी सुरक्षा करें''

प्रकाशक :
अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उत्तरी क्षेत्र)
निर्माण सदन, तृतीय तल
अरेरा हिल्स, भोपाल (म.प्र.)
दूरभाष / फैक्स : 0755-2557354
वर्ष- 2010

आलेख : के. लुर्दुसामी, अधीक्षण पुरातत्वविद्, एम.सी. जोशी, सहा. पुरा., डॉ. एस.के. बाजपेयी, सहा. पुरा.

मानचित्र- जिला अशोक नगर (म.प्र.)

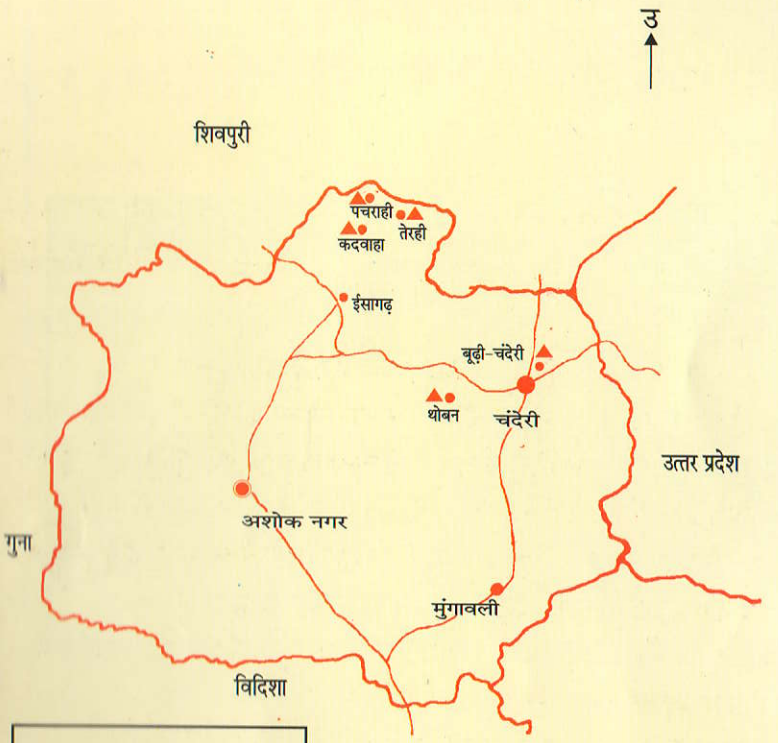

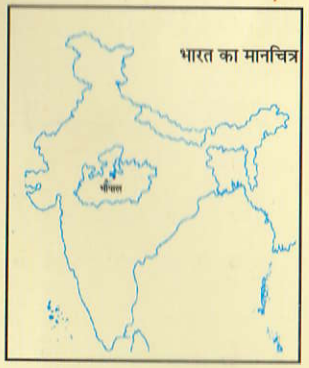

क्र.	विवरण	चिन्ह
1	जिला मुख्यालय	
2	ग्रामीण क्षेत्र	
3	पुरातात्विक स्थल	
4	तहसील	
5	सड़क	

कदवाहा के कच्छपघातकालीन मन्दिर

कदवाहा (अ. 24°25' उ., दे. 77°55' पू.) म.प्र. के अशोक नगर जिले में चन्देरी से लगभग 40 कि.मी. पश्चिमोत्तर तथा ईसागढ़ तहसील से लगभग 16 कि.मी. उत्तर दिशा में स्थित है। प्राचीनकाल में यह स्थल कदम्बगुहा के नाम से जाना जाता था जो कि वर्तमान में कच्छपघात शासकों के समय में निर्मित देवालयों एवं मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान में यह लगभग पाँच हजार की आबादी वाला ग्राम है जो कि सड़क मार्ग द्वारा अशोक नगर, गुना, शिवपुरी आदि नगरों से जुड़ा है। यहाँ का निकटतम रेल्वे स्टेशन लगभग 45 कि.मी. दूर स्थित अशोक नगर है। इस स्थल के भ्रमण हेतु ईसागढ़ तहसील मुख्यालय पर लोक निर्माण विभाग का एक दो कक्षों वाला विश्राम गृह उपलब्ध है। उक्त मन्दिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के भोपाल मण्डल के अन्तर्गत राष्ट्रीय महत्व के संरक्षित स्मारक घोषित हैं।

दसवीं शताब्दी के मध्यकाल से लेकर 12वीं सदी के प्रारंभिक चरण तक प्रभाव प्राप्त कच्छपघात शासकों के राजनीतिक इतिहास के सामान्य सर्वेक्षण से यह विदित होता है कि इन शासकों की तीन शाखाओं ने क्रमशः ग्वालियर (लगभग 950-1104 ई.), दूबकुण्ड (लगभग 1000-1100 ई.) एवं नरवर (लगभग 1075-1125 ई.) क्षेत्र से शासन किया। कच्छप की तरह घात करने अथवा कच्छपों का शिकार करने के कारण इनका नामकरण कच्छपघात होने के अनुमान किया जा सकता है। अपने प्रारंभिक चरण में ये गुर्जर-प्रतिहार शासक के सामन्त के रूप में दिखाई देते हैं किन्तु इस वंश के प्रथम शासक के रूप में अभिहित वज्रदामन द्वारा सन् 950 ई. में प्रतिहार शासकों को पराजित कर ग्वालियर पर अधिपत्य स्थापित करना, पूर्व मध्यकाल के राजनीतिक इतिहास की महत्वपूर्ण घटना थी। इसी के पश्चात् इनकी स्वतंत्र सत्ता स्थापित हुई।

कच्छपघात शासकों की सर्वोत्कृष्ट कृति के रूप में अभिहित ग्वालियर स्थित सहस्रबाहु (सास-बहू) मन्दिर अभिलेख से इस वंश के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इस अभिलेख के अनुसार ग्वालियर पर अधिकार के पहले सिंहपाणिय (सुहानियाँ) इनकी राजधानी थी। ग्वालियर अभिलेख, दूबकुण्ड अभिलेख तथा वि.स. 1177 के एक ताम्रपत्र से इनकी शाखाओं का ज्ञान होता है।

कच्छपघात शासकों ने अपने शासनकाल में ग्वालियर, कदवाहा, नरवर, सुहानियाँ, बटेसर आदि स्थानों पर महत्वपूर्ण देवालयों का निर्माण करवाया किन्तु इनमें भी कदवाहा का अपना विशिष्ठ महत्व है इस छोटे से ग्राम में बलुए प्रस्तर से निर्मित कच्छपघातकालीन 15 देवालय स्थित हैं, जिनका कला एवं स्थापत्य की दृष्टि अत्यन्त

महत्वपूर्ण स्थान है। जिन्हें स्थानीय स्तर पर अध्ययन एवं सुविधा की दृष्टि से निम्न रूप से यथा, एकला मन्दिर, मन्दिर समूह-7 (अ,ब,स), मरघट, तालाब समूह (अ,ब), पछली (अ,ब), बाग समूह (अ,ब), शिव मन्दिर गढ़ी, खिरना समूह (अ,ब) तथा चांदला में विभाजित किया गया है।

कदवाहा स्थित उक्त मन्दिर मुख्यत: शैव तथा वैष्णव सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन मन्दिरों का प्रारंभिक अध्ययन स्व. सर अलेक्ज़ेण्डर कनिंघम, स्व. पं. गोरेलाल तिवारी तथा स्व. एम.बी. गर्दे महोदय ने किया था। इनके अतिरिक्त कच्छपघातकालीन मन्दिरों के कलात्मक पक्ष का विश्लेषण प्रसिद्ध कला स्थापत्य विशेषज्ञ स्व. कृष्णदेव जी ने भी प्रकाशित किया है।

कच्छपघात मन्दिरों की विशेषताएँ-

1. सामान्यत: मन्दिर कम ऊँचाई वाली प्रस्तर जगती पर निर्मित है।
2. मण्डप के निर्माण में अलंकृत लघु स्तम्भों (Dwarf pillars) का उपयोग किया गया है।
3. मन्दिर के जंघा भाग पर प्रतिमाएँ दो पंक्तियों (Double Register) में उत्कीर्ण हैं।
4. मन्दिर के गर्भगृह में प्रवेश द्वार पर ललाट बिम्ब के ऊपर सप्तमातृका तथा नवगृह का अंकन है।
5. लगभग प्रत्येक मन्दिर के पार्श्व में एक कूप (Well) भी निर्मित है।
6. लगभग समस्त मन्दिरों की ड्योढ़ी (Door-sill) के मध्य में उत्कीर्ण मन्दार पर्वत के दोनों ओर मकरासीन, हाथ में कलश पकड़े उदधि कुमार का तथा दोनों पार्श्वों में हस्ति एवं सिंह के युद्ध का अंकन है।

स्तम्भाधारित मण्डप - बाघ समूह-अ

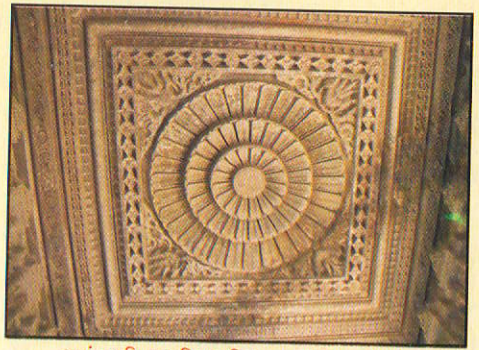

अलंकृत वितान, शिव मन्दिर, तालाब समूह-'अ'

उपरोक्त विशेषताओं के साथ-साथ कदवाहा स्थित मन्दिरों के ललाट बिम्ब पर प्राय: ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश का उत्कीर्णन मिलता है। ललाटबिम्ब की प्रतिमा गर्भगृह की मुख्य प्रतिमा के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। मुख्यत: यहाँ वैष्णव और शैव मन्दिर होने के कारण कभी मध्य में विष्णु और कभी शिव का अंकन है।

कदवाहा के मन्दिरों के सामान्य अध्ययन से उनमें क्रमिक विकास भी दिखाई देता है, जिसे निम्न रूप से समझा जा सकता है-

1. सामान्य सादे और प्राथमिक मन्दिर के रूप में चाँदला मन्दिर को सम्मिलित किया जा सकता है।
2. मध्यश्रेणी के मन्दिरों में सामान्यत: ऊँचे अधिष्ठान पर निर्मित पछली मरघट एवं बागवाला समूह तथा खिरना समूह के मन्दिरों को रखा जा सकता है।
3. मन्दिरों की अत्यन्त अलंकृत एवं विकसित अवस्था में चन्देल कला से प्रभावित तालाब समूह के शिव मन्दिर का उल्लेख किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त यहाँ पर मन्दिरों के निर्माण में प्रयोगात्मक लक्षण भी दिखाई देते हैं। जिसके प्रमाण के रूप में तालाब समूह के एक शिखर युक्त द्विगर्भगृही मन्दिर को प्रस्तुत किया जा सकता है।

यहाँ पर मत्तमयूर सम्प्रदाय का भी प्रभुत्व रहा है और उनसे सम्बन्धित जानकारी भी प्राप्त होती है। यहाँ निर्मित गढ़ी को स्थानीय लोगों द्वारा शैवाचार्यों के आवास के रूप में स्वीकार किया जाता है। गढ़ी स्थित शिव मन्दिर के मण्डप में जड़े अभिलेख से ज्ञात होता है कि 12वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी के सिपाहसालार ने यहाँ आक्रमण कर शिव मन्दिर की जलहरी को नष्ट कर दिया था तथा ठीक मन्दिर के सम्मुख पृथक से एक मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसके अवशेष आज भी विद्यमान हैं।

यहाँ पर निर्मित मन्दिरों में कतिपय विशिष्ठ मन्दिरों का विवरण प्रतिनिधि उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है जो कि निम्न हैं-

चान्दला मन्दिर :-

यह मन्दिर कदवाहा ग्राम से सकर्रा जाने वाले मार्ग पर पश्चिम दिशा में स्थित है। मूलत: भगवान शिव को समर्पित यह मन्दिर कदवाहा में निर्मित मन्दिरों में प्रारंभिक मन्दिर के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। द्राविड़ शैली से समानता रखने वाला पूर्वाभिमुख यह मन्दिर भूमि से उभरते हुए जाड्यकुंभ पीठ पर निर्मित है, जिसकी मुख्य विशेषता पिरामिडाकार कम ऊँचाई वाला शिखर है जिसका शीर्ष घण्टाकार है। मन्दिर में गर्भगृह तथा

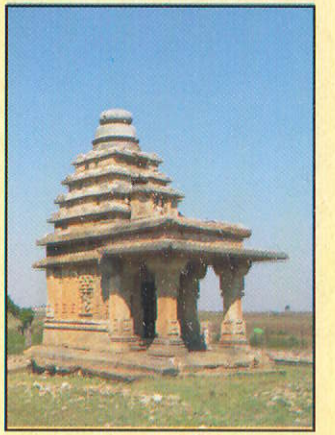

चान्दला मन्दिर

स्तम्भाधारित मण्डप की योजना है। शिखर चारों ओर से चैत्य अलंकरण युक्त है। मन्दिर के जंघा भाग में तीनों ओर निर्मित देव कुलिकाओं में सूर्य, चामुण्डा तथा गणेश की प्रतिमाएँ स्थापित हैं। मन्दिर की शुकनासिका पर भगवान शिव की आसनस्थ प्रतिमा स्थापित है।

गढ़ी स्थित शिव मन्दिर :-

शिव मन्दिर, गढ़ी

भगवान शिव को समर्पित पश्चिमाभिमुखी यह शिव मन्दिर ग्राम के मध्य निर्मित गढ़ी परकोटे के भीतर स्थित है। मन्दिर जाड्यकुम्भ पीठ पर निर्मित है। जाड्यकुम्भ पीठ के ऊपर खुर, कुम्भ पट्टिकायें निर्मित हैं जिनकी देवकुलिकाओं में मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। मन्दिर में मुख्यत: गर्भगृह एवं स्तम्भाधारित मण्डप की संयोजना है। मन्दिर के आगे का हिस्सा एक भग्न मस्जिद द्वारा बाधित है जिसके सन्दर्भ में मन्दिर से उपलब्ध अभिलेख के अनुसार अलाउद्दीन के शासनकाल में इसे नष्ट करने का प्रयास किया गया था और उसके सम्मुख मस्जिद का निर्माण करा दिया गया था।

मन्दिर में पंचशाखा युक्त गर्भगृह एवं स्तम्भाधारित मण्डप दृष्टव्य है। गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। इस मन्दिर का शिखर नष्ट हो चुका है। मन्दिर के जंघा भाग में अनेक देवी-देवताओं सहित अष्टदिक्पालों का उत्कीर्णन भी दो पंक्तियों में किया गया है।

एकला मन्दिर

एकला मन्दिर :-

यह मन्दिर भी कदवाहा-सकर्रा मार्ग पर स्थित है। पूर्वाभिमुख यह मन्दिर एक ऊँची प्रस्तर जगती पर त्रि-रथ

योजना में निर्मित है। जिसके वेदीबंध में परम्परागत रूप से खुर कुम्भ पट्टिकाओं का अंकन है। यह मन्दिर चाँदला मन्दिर के पश्चात द्वितीय चरण में निर्मित हुआ प्रतीत होता है और अपेक्षाकृत उससे विकसित है। जगती पर पहुँचने के लिए पूर्व दिशा में सोपान व्यवस्था है। मन्दिर में गर्भगृह के अतिरिक्त एक लघुमण्डप की योजना थी जो कि वर्तमान में नष्ट हो चुका है। वर्तमान में यह शिव मन्दिर के नाम से जाना जाता है परन्तु ललाट बिम्ब पर उत्कीर्ण गरूड़ासीन विष्णु की प्रतिमा के आधार पर यह वैष्णव मन्दिर प्रतीत होता है किन्तु गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। वैसे तो गर्भगृह का आन्तरिक भाग अलंकरण विहीन है किन्तु दक्षिणी भित्ति पर शेषाशयी एवं दुग्धपान कराती माता का उत्कीर्णन है, जिसे कृष्ण जन्म से समीकृत किये जाने का प्रयास किया जाता है। गर्भगृह की छत पर खिले कमल पुष्प का अंकन है। मन्दिर के गर्भगृह की द्वार-शाखा पर अनेक देवी-देवताओं का अंकन है। ललाट बिम्ब पर उत्कीर्ण विष्णु के दोनों पार्श्वों में ब्रह्मा एवं शिव का उत्कीर्णन है, जिनके मध्य सप्तमातृका एवं नवगृह का अंकन है। गर्भगृह के प्रवेश द्वार के सबसे ऊपरी भाग पर ग्यारह गणदेवताओं का अंकन है। जिन्हें एकादश रुद्र से समीकृत किया जा सकता है। मन्दिर की द्वार-शाखा के दोनों ओर नदी देवियों, गंगा एवं यमुना का उत्कीर्णन है। मन्दिर की ड्योढ़ी पर परम्परागत रूप से युद्धरत हस्ति एवं सिंह का अंकन है तथा मध्य में कलश सहित उदधि कुमार का उत्कीर्णन है। मन्दिर का शिखर भाग नष्ट हो चुका है।

प्रवेश द्वार एकला मन्दिर

शिव मन्दिर, तालाब समूह :-

मन्दिर, तालाब समूह 'अ'

यह मन्दिर कदवाहा ग्राम से बख्तावर ग्राम जाने वाले मार्ग पर स्थित है। पूर्वाभिमुख यह शिव मन्दिर एक प्राचीन तालाब के तट पर स्थित है जिसमें वर्तमान में खेती

की जाती है। यह मन्दिर कदवाहा के समस्त मन्दिरों में अलंकरण की दृष्टि से सर्वोच्चतम् प्रतिमानों का प्रतिनिधित्व करता है। इसे कदवाहा का सर्वाधिक विकसित मन्दिर स्वीकार किया जाना चाहिए।

मन्दिर की मूल संयोजना में गर्भगृह, कक्षासन सहित स्तम्भाधारित मण्डप तथा अर्द्धमण्डप सम्मिलित हैं। मन्दिर एक ऊँची जगती पर स्थित है जिस पर पहुँचने हेतु पूर्व दिशा में सोपान व्यवस्था है। वेदीबन्ध में खुर, कुंभ तथा कलश पट्टिकाओं का उत्कीर्णन है। मन्दिर के गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। गर्भगृह का प्रवेश द्वार सप्तद्वार शाखाओं में विभाजित है। ललाट बिम्ब पर शिव युगल का अंकन है जिनके पार्श्वों में ब्रह्मा एवं विष्णु युगल उत्कीर्ण है। मण्डप की छत खिले कमल पुष्प से अलंकृत है और चारों ओर देवी-देवताओं का उत्कीर्णन है। मण्डप के स्तंभ अत्यन्त अलंकृत एवं विभिन्न मुखाकृतियों वाले भारवाहकों से सुसज्जित है। मन्दिर के जंघा भाग में लक्ष्मी-नारायण, उमा-महेश्वर, ब्रह्मा, शिव, भैरवी एवं विष्णु का अंकन है। यह मन्दिर कच्छपघात स्थापत्यकला का महत्वपूर्ण प्रतिनिधि उदाहरण है।

मन्दिर, तालाब समूह 'ब'

द्वि-गर्भगृही मन्दिर, तालाब समूह :-

ऊपर उल्लिखित मन्दिर के पार्श्व में एक द्वि-गर्भगृही मन्दिर निर्मित है। जिसमें एक ही शिखर है किन्तु पूर्वाभिमुख एवं पश्चिमाभिमुख दो गर्भगृह निर्मित है।

उक्त मन्दिर त्रि-तलीय दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान में मन्दिर में प्रतिमाविहीन गर्भगृह लक्षित है। मन्दिर का मण्डप सम्भवत: नष्ट हो चुका है। अलंकरण की दृष्टि से यह मन्दिर अत्यन्त साधारण है। वस्तुत: मन्दिर निर्माण कला में इस प्रकार के उदाहरण कम ही दिखाई देते हैं। अत: कदवाहा में निर्मित इस द्वि-गर्भगृही देवालय को मन्दिर निर्माण कला में प्रयोगात्मक रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए। यद्यपि यह अवश्य है कि कदवाहा परिक्षेत्र में इस प्रकार के प्रयोगों को कम महत्व मिला।

कदवाहा की मूर्तिकला

कदवाहा स्थित कच्छपघात मन्दिर जितने अपनी स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है उससे भी अधिक उनकी मूर्तिकला अध्येताओं को आकर्षित करती है। विभिन्न देवालयों में उत्कीर्ण ब्राह्मण देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ न केवल शिल्पशास्त्रीय कला के आधार पर निर्मित की गई है बल्कि उनमें ताल-मान-प्रमान के साथ-साथ क्षेत्रीय विशेषताओं को भी सम्मिलित किया गया है। यहाँ से प्राप्त प्रतिमाओं की ऊँचाई अपेक्षाकृत कम है।

उल्लेखनीय है कि सूर्य, नृत्य गणेश, शिव, गरुड़ासीन विष्णु, सरस्वती, चामुण्डा, भैरवी आदि प्रतिमाएँ तो मुख्यत: प्राप्त होती ही हैं किन्तु इसके साथ अष्टदिक्पाल, नवगृह, सप्तमातृका तथा दशावतार का उत्कीर्णन भी उल्लेखनीय है।

मन्दिरों की द्वारशाखाओं पर उत्कीर्ण युगल प्रतिमाएँ, नदी-देवियाँ, इन मन्दिरों की कलात्मकता में वृद्धि करती है। ललाट बिम्ब पर त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का उत्कीर्णन धार्मिक समन्वय को प्रदर्शित करता है। इसके अतिरिक्त कदवाहा के मन्दिरों में अप्सराओं, नायिकाओं, व्यालों के साथ-साथ स्तम्भों पर उत्कीर्ण भारवाहकों का तक्षण इसे अद्वितीय बना देता है। यही कारण है कि कदवाहा के ये कच्छपघातकालीन मन्दिर प्रारंभ से ही कला अध्येताओं, शोधार्थियों, इतिहासकारों के साथ-साथ जन सामान्य को भी अपनी ओर आकर्षित करते रहे हैं।

उक्त मन्दिरों के सामान्य विवेचन से सुस्पष्ट होता है कि कदवाहा दसवीं-बारहवीं शताब्दी के मध्य स्थापत्य कला का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था जिसे मुख्यत: कच्छपघात शासकों ने प्रश्रय प्रदान किया। उपलब्ध साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में शैवाचार्यों का प्रभाव था और विशेषकर शैव मन्दिरों के निर्माण में उनकी प्रभावी भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता।

स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला के अतिरिक्त समय-समय पर प्रागैतिहासिक पाषाण उपकरणों की प्राप्ति की सूचना भी मिलती रही है, जिनके विस्तृत अध्ययन एवं वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता है, जिससे कि कदवाहा के प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया जा सके।

अत: उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में कदवाहा के प्राचीन राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक इतिहास तथा पुरातत्व के विस्तृत शोध की आवश्यकता है जिससे कि उसका सम्पूर्ण सांस्कृतिक परिदृश्य उभर कर सामने आ सके। वस्तुत: इस प्रकार के अध्ययन की अपेक्षा भविष्य में होने वाले अनुसंधानों से की जा सकती है।

नृत्य गणेश-मन्दिर समूह-7, ब

सरस्वती-मन्दिर समूह-7, ब

पार्वती-मन्दिर समूह-7, अ

दिक्पाल (नैऋत्य)-शिव मन्दिर, गढ़ी

चामुण्डा- चान्दला मन्दिर

नायिका- एकला मन्दिर

स्थल मानचित्र

कच्छपघातकालीन मन्दिर समूह

कदवाहा, जिला-अशोक नगर

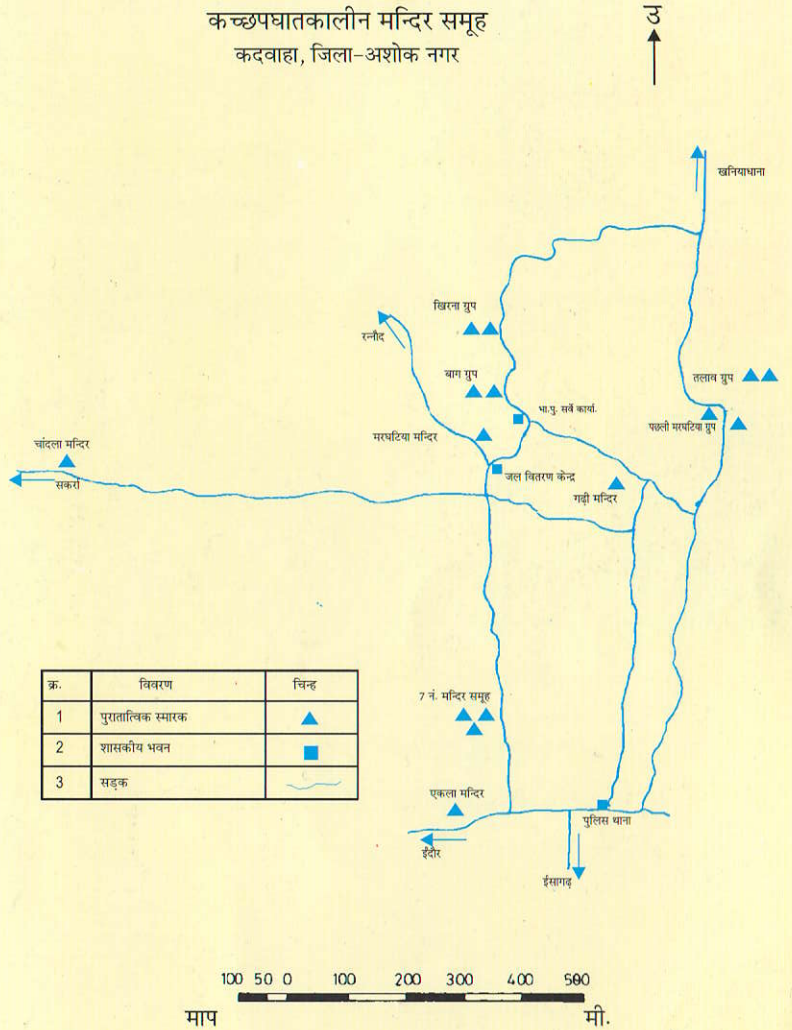

छायाचित्र-
अल्हाद व्यास, कालूराम मालवीय

रेखाचित्र-
लखनकुमार भागचंदानी, संजय श्रीवास्तव